भजन

तर्ज– तेरे मेरे मिलन की ये रैना

पिया मेरे अब ना कुछ है कहना, कहनी सुननी गई रात में
अब हमें तो रहनी में है आना

1) रहनी में ही रूहों का सुख अपना, जिसको चाहे रूह मेरी लेना
सुख अखंड जब वो मिलेगा, छूटे ना वो रूह से मेरी ..छूटे ना

2) धनी बिना जो कुछ भी ना चाहे, रूह की रहनी ये ही कहलायें
वो फना है बस धनी पे, चाहें ना वो और कुछ भी, चाहे ना

3) जो भी चाहें करके वो देखें, अपने दिल में शक ना कुछ रखें
चाहे गर मिलना धनी से, रहनी में आकर के देखें– देखें ना